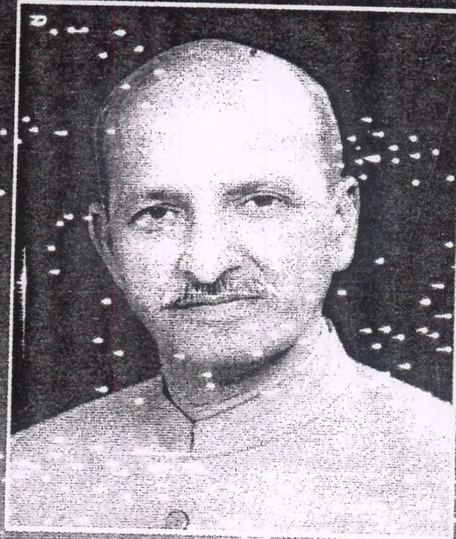


अंतिम आवरण-डा.अ.कीर्तिवर्धन

नाम - डा. अ. कीर्तिवर्धन (कवि ,लेखक ,समीक्षक)
जन्म तिथि -09 -08 -1956
जन्म स्थान- शामली (उत्तर प्रदेश)
पिताश्री - श्री विद्याराम अग्रवाल
माताश्री - श्रीमती लक्ष्मी देवी

प्रकाशित कृतियाँ - मेरी उड़ान, सच्चाई का परिचय पत्र, मुझे इंसान बना दो, सुबह सवेरे, दलित चेतना के उभरते स्वर (परिचर्चा पुस्तिका), जतन से ओढी चदरिया (संपादित कृति), चिंतन बिंदु, हिन्दू राष्ट्र भारत

अन्यान्य -देश के लगभग सभी राज्यों में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित।

अनुवाद - अनेक रचनाओं का अंगिका, मैथिली, तमिल, उर्दू, नेपाली, कन्नड, अंग्रेजी में अनुवाद व प्रकाशन।
सुबह सवेरे का मैथिली में अनुवाद व प्रकाशन - अनुवादक डा. योगानंद झा
सच्चाई का परिचय पत्र का कन्नड में अनुवाद व प्रकाशन -अनुवादक डा.सुनील कुमार पारित
मुझे इंसान बना दो का उर्दू में अनुवाद, अनुवादक जनाब इमरान हासमी
चुनिंदा कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद व प्रकाशन - अनुवादक - डा. राम शर्मा

सम्मान -विद्यावाचस्पति तथा विद्या सागर की उपाधि व देश भर से 70 के लगभग सम्मान व उपाधि

सम्बद्धता -अनेक राष्ट्रीय सामाजिक व साहित्यिक संस्थाओं व पत्रिकाओं के उत्तर प्रदेश संयोजक आदि,

अनेक रचनाओं का महाराष्ट्र शिक्षा बोर्ड द्वारा चयन

आकाशवाणी -दिल्ली, साधना टी.वी. (कवियों की चौपाल), सुदर्शन न्यूज चैनल व रेडियो द्वारका से वार्ता प्रसारण

इंटरनेट पर विभिन्न ब्लाग व फेसबुक पर निरंतरता से सक्रिय

सम्प्रति - 1980 से नैनीताल बैंक में कार्यरत, वर्तमान में बैंक की मुजफ्फरनगर शाखा में कार्यरत

सम्पर्क - "विद्यालक्ष्मी निकेतन", 53,महालक्ष्मी एन्क्लेव, जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर -251001 उत्तर प्रदेश
दूरभाष -0131-2604950, 08265821800
ई.मेल - a.kirtivardhan@gmail.com

प्रकाशक - विद्यालक्ष्मी प्रकाशन
53,महालक्ष्मी एन्क्लेव, मुजफ्फरनगर - 251001 (उत्तर प्रदेश)
0131 -2604950, 2623209, 9557403789

भोरे भोर

डा.अ.कीर्तिवर्धन

मैथिली अनुवाद - डा.योगानन्द झा

भोरे-भोर

अनुवाद
योगानन्दझा

मूल हिन्दी
डॉ. ए. कीर्तिवर्द्धन

प्रकाशक
विद्यालक्ष्मी प्रकाशन - मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)

ISBN No. : 978-93-80363-03-05

वितरक :
लक्ष्मी स्टेशनरी एवं जनरल स्टोर
32-अग्रवाल मार्किट, महावीर चौक
मुजफ्फरनगर -251001 (उ० प्र०)
मोबाइल नं० - 09997044950

53-महालक्ष्मी एन्कलेव
मुजफ्फरनगर -251001 (उ० प्र०)
फोन नं० - 0131-2604950
08265821800

प्रकाशक :
विद्यालक्ष्मी प्रकाशन
53-महालक्ष्मी एन्क्लेव
जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर -251001 (उ० प्र०)

संस्करण : प्रथम, 2014 ई.

मुद्रक : इण्डियन प्रिंटिंग प्रैस, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर।
0131-2605182, 9412583103, 107

मूल्य 20.00

दू शब्द

हिन्दी भाषा साहित्यक विश्रुत विद्वान एवम् निविष्ट साहित्यकार डा. ए. कीर्तिवर्द्धन रचित हिन्दी बाल कविता संग्रह ''सुबह सबेरे'' पोथीक डा. योगानन्दझा द्वारा 'भोरे भोर' नामक मैथिली भाषा मे अनूदित पोथी पर विचार करबा सँ पूर्व आवश्यक अछि बाल साहित्यक उद्भव और विकासक संग-संग एकर उपयोगिता एवम् महत्व पर विचार करब, संगहि वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे भारतीय भाषा साहित्य मध्य ई कतेक स्थान निर्धारित कयने अछि? दोसर अनूदित साहित्यक कतेक औचित्य एवम् महत्व अछि ! वर्तमान काल मे बाल साहित्यक विवेचन शिष्ट साहित्यक अन्तर्गत कयल जा रहल अछि, मुदा ई सत्य अछि जे कोनहुँ युगमे शिष्ट साहित्य सँ भिन्न रचना ओहि युगक लोक साहित्य कहबैत अछि एवम् साहित्यक विकासक प्रक्रिया मे अपन प्रामाणिक महत्व प्रमाणित करबाक पश्चात् लोक साहित्य शिष्ट साहित्य मे परिणत भऽ जाइत अछि । दोसर शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे शिष्ट साहित्यक मूल स्रोत लोक साहित्य थिक ।

कोनहुँ समाजक जातीय मनीषा, सामुदायिक चेतना, जातीय बोध, मानवीय मूल्य और जीवन दर्शनक विविध पक्ष के बुझबा लेल ओकर लोक के बुझब आवश्यक अछि । जीवन दर्शन और आध्यात्म सँ लऽ कऽ मनुष्यक समस्त राग-विराग हमर एहि लोक मे सुरक्षित अछि । वस्तुतः लोक साहित्य हमर भाषा अथवा बोली मे जातीय स्मृतिक ओ साहित्यिक रूप थिक जे मौखिक और लिखित दुनू परम्पराक निर्वहन करैत हमर जातीय चेतना और जातीय बोधकेँ सुरक्षित रखने अछि । लोक साहित्यक रूपमे अभिव्यक्त ई सार और सत् जीवनानुभव सँ संचित

कयल जाइत अछि तथा मानवीय संस्कृतिक शुद्ध स्वरूप लोक साहित्य मध्य दृष्टिगोचर होइत अछि ।

भारतीय संस्कृतिक आशय 'प्रकाश'क मार्ग सँ अनुष्ठान कयला सँ प्राप्त भेनिहार संस्कार सम्पन्नता थिक । (भारत) अर्थात् प्रकाशमे प्रकाशक मार्ग मे 'रत' अर्थात् दत्तचित भऽ कऽ अनुष्ठान कयला सँ जे संस्कार-सम्पन्नता मनुष्यमे बढ़ैत अछि, सएह थिक भारतीय संस्कृति । एहि संस्कृतिक संवर्द्धन मे लोक संस्कृतिक योगदान कम महत्वपूर्ण नहि अछि । वस्तुतः लोक संस्कृति भारतीय संस्कृति केँ जे सभ सँ महत्वपूर्ण दान देने अछि-ओ थिक आत्मीयता, संगहि इहो तथ्य महत्वपूर्ण अछि जे आत्मीयता थिक ईश्वर प्रदत्त और जकर सुच्चा स्वरूप थिक बाल-बच्चाक प्रति श्रेष्ठजनक स्नेह । ई स्नेह, वात्सल्य आदिये काल सँ जीव मात्र मे प्रकृति प्रदत्त थिक तथा एकर अभिव्यक्तिक मानव मात्र लेल एकटा प्रमुख साधन थिक बालोपयोगी कथा-कविता-गीत । अतः कहल जा सकैत अछि जे मानवक क्रमिक विकासक संग-संग बाल-साहित्य विकसित होइत रहल और एकर मूल स्रोत थिक लोक साहित्य। वर्तमान मे आवश्यक अछि जे लोक कंठ मे संचित बाल-साहित्यक संग्रह कयल जाय तखनहि ई समृद्ध होयत और एकर प्रासंगिकता तखन और महत्वपूर्ण भऽ जायत जखन बाल लोक साहित्यकेँ मैथिली साहित्यक मुख्य धारा मे शामिल कऽ ओकर उदारवादी और मानवतावादी परम्पराक पोषण, संरक्षण और सापेक्ष मूल्यांकन कयल जाय ।

मिथिला वासीक संस्कृत पर आस्था और मैथिली भाषाक प्रति राजकीय संरक्षणक अभाव मैथिलीक साहित्यिक परम्परा केँ सुदृढ़ और सबल होयबामे अवरोधक बनल रहल संगहि शास्त्रीय वातावरण मे पोषित भेनिहार मैथिलक सांस्कृतिक धरातल सेहो औसत सँ किछु ऊँच रहल, फलतः किछु पूर्वकाल धरि मैथिली साहित्य और लोक साहित्यक

विभाजक रेखा अस्पष्ट भेल रहल । जकर स्पष्ट प्रमाण थिक जे परिष्कृत जनरुचि 'भाखा' मे रचित पण्डित लोकनिक साहित्यिक गीतके सेहो लोकगीत सदृश ग्रहण कयलक एवम् पुनः जनकंठ मे निवास कयनिहार ई गीत कालक्रम मे परिवर्तित होइत विशुद्ध लोकगीत भऽ गेल । यैह गति बाल साहित्यक अछि जकर एकटा समृद्ध परम्परा लोक कंठ मे लोक साहित्यक रूप मे एखनहु छिड़िआयल अछि ।

संगहि इहो सत्य अछि जे एहि तथ्य केँ नकारल नहि जा सकैत अछि-भारतवर्षक प्रत्येक व्यक्ति, समूह, समुदाय, समाज एवम् प्रान्त बहुभाषिक अछि आर भारतवर्ष एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र थिक और एहि देशक प्रत्येक भाषाक चिरकाल सँ अपन-अपन भूमिका रहल अछि । प्रत्येक भाषाक अन्तस्तल धरि ओकर प्रान्तवासीक जातीयता प्रविष्ट भऽ गेल अछि। अतएव नहि तऽ एकर परित्याग संभव अछि और नहि श्रेयष्कर । वस्तुतः भारतक भाषायी यथार्थक यैह परम सत्य थिक । विभिन्न प्रतिकूल परिस्थिति मे सेहो भारतीय साहित्य जीवित और गतिशील रहल, एकर एकटा प्रमुख कारण इहो थिक जे ई कहिओ लोक परम्पराक उपेक्षा नहि कयलक। लोक साहित्य एहि लेल प्रेरणाक अक्षय स्रोत बनल रहल । प्रत्येक भाषाक लोक साहित्यमे बालकक अवस्थाक अनुरूप शिशु-श्रव्य गीत, बालक्रीड़ा गीत, खिस्सा-पिहानी विद्यमान अछि आर यैह बाल लोक साहित्य नेनाक मनोरंजनक साधन एवम् ओहि माध्यमे भाव-बोध ओ भाषा-बोधक प्राकृतिक माध्यम थिक ।

छठम-सातम दशकमे भाषा अनुरक्षण और भाषा परिवर्तनक तीव्र प्रभाव पश्चिमक देन थिक । भाषा परिवर्तन अर्थात् अपन मातृभाषा त्यागि कऽ दोसर भाषा ग्रहण करब । भाषा वैज्ञानिक शब्दावली मे कहल जा सकैत अछि जे कमजोर (इनफिरियर) भाषा (मातृभाषा) के छोड़ि ताकतवर (डामिनेंट) अथवा सत्ता सम्पन्न भाषाक प्रति आकर्षणक

समाज-भाषिक प्रक्रिया। ई प्रक्रिया अमरीका और यूरोप सदृश प्रभुता सम्पन्न एकभाषी देशक समाजिक दबाबक परिणाम छल और एहि दबाबक कारणें अपन मातृभाषा सँ शिफ्ट कऽ दोसर भाषा ग्रहण कयनिहारक वेशी संख्या अप्रवासी समुदायक छल । शिक्षा और नौकरी सदृश दू मूलभूत आवश्यकता एहि "डामिनेंट" भाषा बिना नहि प्राप्त कयल जा सकैत छल, यैह स्थिति वर्तमान काल मे सेहो अछि । संगहि भारतवर्षक भाषायी इतिहास मे भाषा संघर्ष अथवा भाषायी अन्तर्विरोधक स्थिति शासक वर्ग द्वारा उत्पन्न कयल गेल और ई आरम्भ भेल ब्रिटिश राज सँ । ब्रिटिश उपनिवेशवाद भाषाक माध्यम सँ साहित्य और संस्कृतिक जड़ि पर प्रहार करैत रहल । परिणामस्वरूप वर्तमान मे युवा वर्गक साहित्यक प्रति उदासीनता बढ़ैत गेल अछि । जहाँ धरि मैथिली भाषाक प्रश्न अछि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अन्य भाषा सदृश मैथिलीक माध्यम सँ स्कूली शिक्षाक अभाव एवम् एक विषयक रूपमे मैथिली भाषा साहित्यक अध्ययनक अनिवार्यताक अभावसँ सेहो बाल साहित्य सर्जन पर प्रभाव पड़ल अछि, बाल पाठकक अभाव व्याप्त अछि । तथापि साहित्यकार लोकनि बाल साहित्यक सृजन मे उन्मुख होइत रहलाह अछि ।

जहाँ धरि अनुवादक प्रश्न अछि-अपन स्वरूप और परिप्रेक्ष्य मे एकटा आधुनिक अवधारणा थिक । अपन निकट एवम् दूरक भाषिक संसार और ओकर ज्ञानोलपब्धि के बुझब, पुनः ओकरा दोसर भाषामे व्यक्त करब अनुवादक स्वभाव होइत अछि, यद्यपि ई स्वभाव मात्र ज्ञान सँ व्यक्त होइत अछि तथापि अनुवादमे अभिव्यक्तिक माध्यम हेतु स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषाक पारस्परिकता महत्वपूर्ण होइत अछि । ई कथनक भाषिक स्थानान्तरणक रूपमे घटित होइत अछि, दोसर शब्दमे स्रोत भाषाक कथनकें लक्ष्य भाषा मे प्रस्तुत करबाक रूपमे । एहि कारणें अनुवाद के

भाषा संवाद कहल जाइत अछि । यद्यपि संवादक अन्तरभाषिकता एकटा आधुनिक प्रतीति थिक जकर सरोकार ज्ञानक प्रसार होइत अछि । अनुवाद अपन स्वभाव और संरचना मे एकटा आधुनिक परिघटना थिक । विभिन्न ज्ञानानुशासन, समुदाय और सभ्यताक मध्य संवाद स्थापित करबाक अवधारणा । भरिसक तें अनुवादक एखन धरि सर्वमान्य परिभाषा सुनिश्चित नहि भऽ सकल अछि और नहि एकर सर्वमान्य सिद्धान्त निरूपित भेल अछि ।

अनुवाद वस्तुतः संवाद होइत अछि, दोसर शब्दमे वाद (कथन)क संवाद, भाषाक संवाद । भाषिक संघर्षक विरुद्ध भाषिक समन्वयक प्रस्तुति, तें अनुवाद भाषाक मध्य सम्प्रेषणक माध्यम होइत अछि । अनुवाद बेशक दूनू भाषाक कर्म थिक मुदा ई मानवक सम्प्रेषणक आकांक्षा सँ उत्प्रेरित कर्म होइत अछि । सम्प्रेषण भाषा मे होइत अछि और भाषा आदिम मौनक प्रतिकार मे विकसित मानव अभिव्यक्तिक सभसँ कारगर माध्यम होइत अछि, तें भाषाक स्वरूप तथा परिप्रेक्ष्य व्यापक और बहुआयामी होइत अछि । स्वभावतः अनुवादो अपन स्वरूप और परिप्रेक्ष्य मे जतेक व्यापक होइत अछि सरोकारक मामलामे ओतबे समसामयिक । अतः ई कहनाइ सर्वथा उचित अछि जे अनुवाद एकटा आधुनिक अवधारणा थिक । एकटा एहन अवधारणा जे तत्त्वतः जतेक आधुनिक अछि ओतबे पारम्परिक अर्थात् पूर्ण रूप सँ अन्तरभाषिक, दोसर शब्दमे दू भाषाक मध्य घटित होमयवला ।

मुदा कोनो दू भाषा समान नहि होइत अछि । ध्वनि, शब्द, अर्थ, उच्चारण, लय, पदबन्ध, वाक्य विन्यास, मुहावरा, लोकोक्ति, अलंकार, छन्द आदि संरचनात्मक स्तर पर भाषा एक दोसर सँ भिन्न होइत अछि, संगहि परिवेशगत विशिष्टता पर आधारित ओकर अपन अभिव्यक्ति कौशल होइत अछि । एहि निजताक कारणें कोनो एकटा भाषा अन्य

भाषासँ सर्वथा भिन्न होइत अछि, दोसर शब्द मे अपन उदाहरण अपने होइत अछि । फलतः एक भाषाक कथनक (पाठ) दोसर भाषा मे अनुवाद करब ओतेक सहज नहि होइत अछि जतेक प्रतीत होइत अछि।

भाषाक संरचनात्मक विशिष्टताक कारणेँ अनुवाद मे पाठक क्षति अवश्यंभावी होइत अछि और जकरा अनुवाद मे क्षति (Loss of translation) कहल जाइत अछि । दक्ष अनुवादक एहि क्षति केँ अपन ज्ञान, अनुभव तथा कौशल सँ पूर्ण करबाक प्रयास करैत अछि एवम् अनुवाद रूपमे परिवर्तित भेला पर रचना एकटा नव रूप, नव संवेदना सँ युक्त,एकटा नव जीवन ग्रहण कऽ लैत अछि, नव रचनाक आभास देबय लगैत अछि । एवम् प्रकारेँ कथ्य एवं संवेदनाक संबंध मे मूल रचना सँ भिन्न नहि होइतहुँ मूलसँ पृथक् होयबाक प्रतीति अनुवादक अपन विशेषता होइत अछि ।

भाषा जौं अभिव्यक्तिक माध्यम थिक तऽ अनुवाद अभिव्यक्ति के सुगम बनयबाक उपाय, अर्थात् एक भाषाक अभिव्यक्ति के दोसर भाषा मे लऽ जयबाक माध्यम। एवम् प्रकारेँ अनुवाद मे मानव समाजक सम्वाद और सम्प्रेषणक निहितार्थ नुकायल रहैत अछि और जे सभ्यताक उद्भव और विकास सँ जुड़ल अछि । अस्तु अनुवादक धारणा एहन सभ्य अवधारणाक थिक जे सभ्यता जतेक प्राचीन और अपरिहार्य अछि । सभ्यताक विकास सम्भव नहि होइतैं जौं मनुष्य-मनुष्यक बीच संवाद या सम्प्रेषण नहि रहितय । वस्तुतः अनुवाद दर्शनक उद्गम थिक ।

अनुवादक आरम्भ पूरब और पश्चिम मे एकहि समयमे मानल जा सकैत अछि । बहुभाषिकता दुनियाक प्रत्येक भागमे रहल अछि, तऽ सहजहिं कहल जा सकैत अछि जे सभ्यताक आरम्भ मे मानव समाज मे आदिम ज्ञान-अज्ञानक हेतु अनुवादक आवश्यकताक अनुभव भेल हयत । ज्ञानक विनिमय ओहि समय मे प्राथमिक आवश्यकता रहल होयत। एहि

आवश्यकताक पूर्ति एक समाजमे जौं संवादक माध्यम सँ भेल हयत तऽ दोसर समाज मे अनुवादक माध्यम सँ। निश्चय एकर स्वरूप आरम्भ मे बेतरतीब रहल हयत कियैक तऽ अपन आदिम अवस्थामे अनुवाद सुसंगत कार्य नहि छल । ई ज्ञानक चाह और ज्ञानक अकुलाहटक परिणाम मात्र छल मुदा एहि मे परिवर्तन तखन भेल जखन भाषाक विकास भेल एवम् विभिन्न भाषा-भाषीक मध्य एकटा समझदारी विकसित भेल । कोनो प्राचीन भाषाक ज्ञानके दोसर भाषा मे उपलब्ध करयबाक आवश्यकताक अनुभव भेल । मानव जीवन मे धर्मक महत्व स्थापित भेला पर सम्भवतः एहि मे गति आयल । भारतवर्ष मे वैदिक साहित्य एकर पाथेय बनल तऽ पश्चिम मे बाइबिल ।

अनुवादक अवधारणाके बुझबाक क्रममे वैदिक संस्कृत भाष्य पर विचार करब आवश्यक अछि । वैदिक संस्कृत ग्रन्थक भाष्य जखन शास्त्रीय संस्कृत मे कयल जा रहल छल तखन भाष्यकारक समक्ष बहुतो वैदिक शब्द के नहि बुझबाक समस्या छल । ओहन शब्दक सन्दर्भ सेहो अज्ञात छल कियैक तऽ ओहन शब्द अप्रचलित भऽ गेल छल । एहि समस्याक निराकरण भाष्यकार अनुमानक आधार पर कयलनि, शब्दक अर्थक ज्ञान ओकर धातुक आधार पर तथा पाठक सन्दर्भक आधार पर। वस्तुतः वैदिक साहित्यक भाष्य अथवा टीकाग्रन्थ अनुवादे थिक । दोसर शब्द मे भाष्य मूलक ओहि भाषामे विवेचन थिक तऽ भाषा टीका अनुवाद विवेचन । एवम् प्रकारे वैदिके कालसँ यात्रा करैत वर्तमान मे अनुवाद शास्त्रक रूपमे अपन स्थान निर्धारित कऽ लेने अछि ।

विगत पाँच दशक सँ अनुवाद एकटा स्वतंत्र और आधुनिक शास्त्रक रूप मे महत्वपूर्ण विधा भऽ गेल अछि । पूर्व मे आम धारणा छल जे ई साहित्यके केन्द्र मे राखि कऽ भाषांतरण करबाक एकटा विषय क्षेत्र थिक, मुदा विगत किछु दशक सँ अनुवादक प्रक्रिया तथा अनूदित पाठक

प्रकृतिक संबंधमे भाषा वैज्ञानिक, सूचना सैद्धान्तिक, तर्कशास्त्री और अर्थ विज्ञानी लोकनि अध्ययन एवम् विश्लेषण करब आरम्भ कऽ देने छथि, जाहि सँ अनुवादमे अन्तर ज्ञानानुशासन अध्ययनक प्रवृत्ति प्रबल भेल अछि एवम् साहित्येतर पाठक अनुवाद प्रणाली एवम् प्रक्रिया पर सेहो विचार करब आरम्भ भेल अछि । वर्तमान बाजारवादी व्यवस्था मे उपभोक्ता सापेक्ष (Consumer oriented) अनुवाद सेहो ज्वलन्त सत्यक रूपमे समक्ष आयल अछि तथा सामाजिक अनिवार्यताक रूपमे मान्य भऽ गेल अछि । अनुवाद के भाषा विज्ञान तथा शैली विज्ञानक निकष पर सेहो जाँचल जा रहल अछि और वस्तुतः ई अनुवादक भावपरक पाठ (Ecmotive text) सँ तथ्यपरक (Informative text) मे रूपान्तरणक द्योतक थिक । आब स्पष्ट रूप सँ बुझल जाय लागल अछि जे मात्र साहित्यिक अथवा सामाजिक उपादेयताक दृष्टि सँ नहि, उपनिवेशवाद सँ मुक्त विकसित राष्ट्रक भाषाइ आवश्यकता लेल सेहो अनुवाद एकटा प्रासंगिक सत्य भऽ गेल अछि ।

बाल साहित्यक परम्परा प्राचीन होइतहुँ प्रत्येक भाषामे बाल साहित्यक अभाव अछि और एहि अभावक पूर्ति लेल बाल साहित्यक अनुवाद सेहो प्रासंगिक अछि । सरल शब्द, सरल वाक्यसँ युक्त बाल मानस के आकृष्ट करैत कर्तव्यक बोध जागृत करैत तथा मानव जीवनक मूल्य सँ ओतप्रोत बाल वर्ग के समर्पित हिन्दी बाल कविता संग्रह डा. ए. कीर्तिवर्द्धन रचित 'सुबह सबेरे' क अनुवाद डा. योगानन्द झा कयलनि अछि। निश्चये साहित्य जगत मे एहि पोथीक स्वागत होयत । शुभकामनाक संग ।

नीना ठाकुर

04.08.2013

सदस्या

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली



नेनालोकनि !

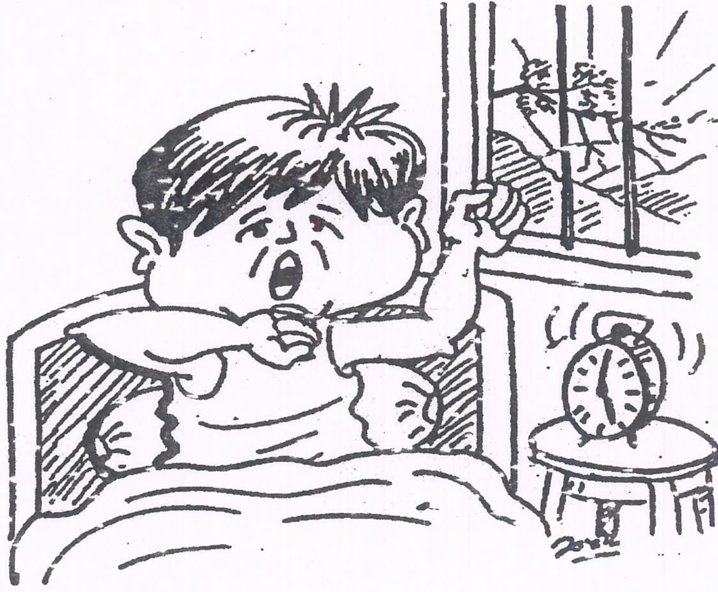
ई अहीँ सभक हेतु थिक।

हमर अजनास धिया-पुता लोकनि !

सभ दिन भोरे-भोर चिड़ँइ-चुनमुन्नी सभ जागि जाइत अछि आ किछु गाबऽ लगैत अछि। अहूँ सभ गाउ, गाबि सकी, तेँ हम अहाँसभक हेतु किछु छोट-छोट कविता रचलहुँ अछि जाहिसँ अहाँ सभ ओकरा गाबि सकी। गओला सँ मोनक गीरह फुजि जाइत छैक, मोन प्रसन्न रहैत छैक। अहूँ सभ हलसल-फुलसल रहऽ चाहैत छी ने! तखन एहि कविता सभकेँ कण्ठस्थ कऽ लिअऽ आ जखने मोन होअय, एकरा सभकेँ गबैत जाउ। अहाँक प्रसन्न मोन अहाँकेँ नीरोग काया देत आ तखनहि अहाँ सभ प्रतिभावान बनि सकब, देशक हेतु किछु नव काज करब तँ देश मे अहाँक नाम होयत।

तखन, नेना सभ ! जय हिन्द ! ई पोथी अहीँलोकनिकेँ समर्पित अछि।

-कीर्त्तिवर्द्धन



भोरे-भोर

जीवनमे कीर्त्तिक जँ लिलसा,
भोर-सबेरे जागब सीखू
मातु-पिताकेँ कऽ प्रणाम पुनि
नियत काजमे लागब सीखू
नित्य-क्रिया पुनि कुड़रा-दतमनि
तखन नहा कऽ पूजी ईश
भोरंक पहर बेस सुन्नर अछि
मोन लगाबी पढ़बा दीश



भोर-सबेरे कहियो कखनो
बगड़ा-बगड़िक गप्प अकानि
हँसइत-बजइत गीत गबै अछि
घर-आङन ब्रिच लिअह जानि
पानिक बासन भरि ओकरा लय
अन्न किछु दाना दी छीटि
ओकर नहायब-चुभकब देखब
मन प्रसन्न भऽ जायत मीत



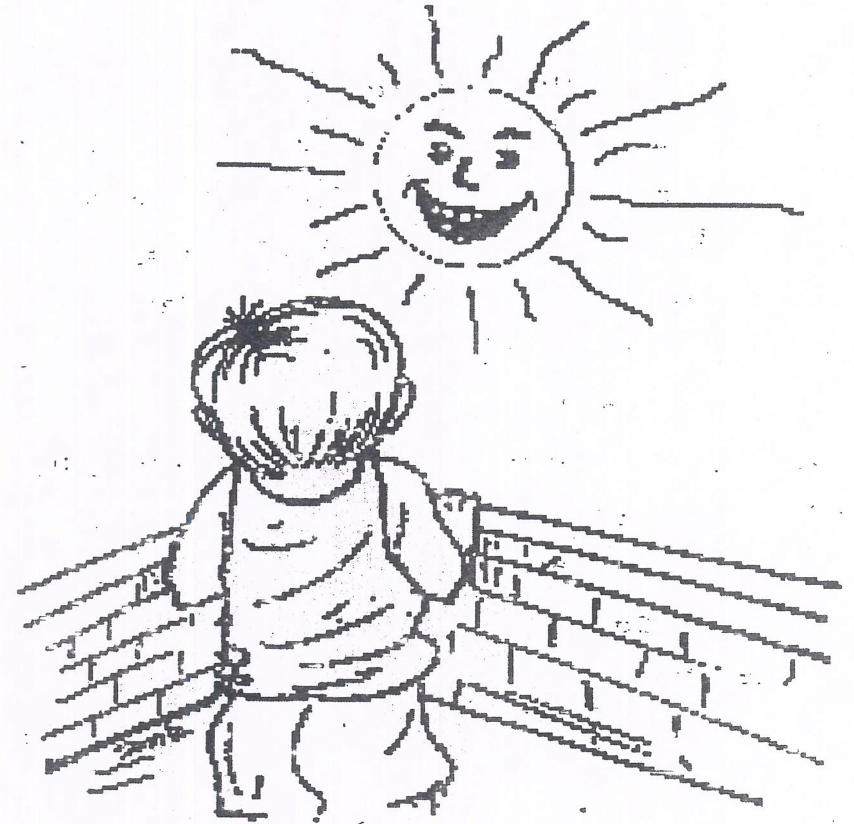
भोर-सबेरे आसमान दिस
ध्यान लगा कऽ देखब जखने
शुद्ध हवामे कते मजा अछि
अनुभव तकरो होयत तखने
मन्दिरमे घंटा केर स्वर आ
गीत-भजन, ज्ञानक किछु बात
फटकीयेसँ सुनि पड़त आ
जीवन सफल बनाओत तात



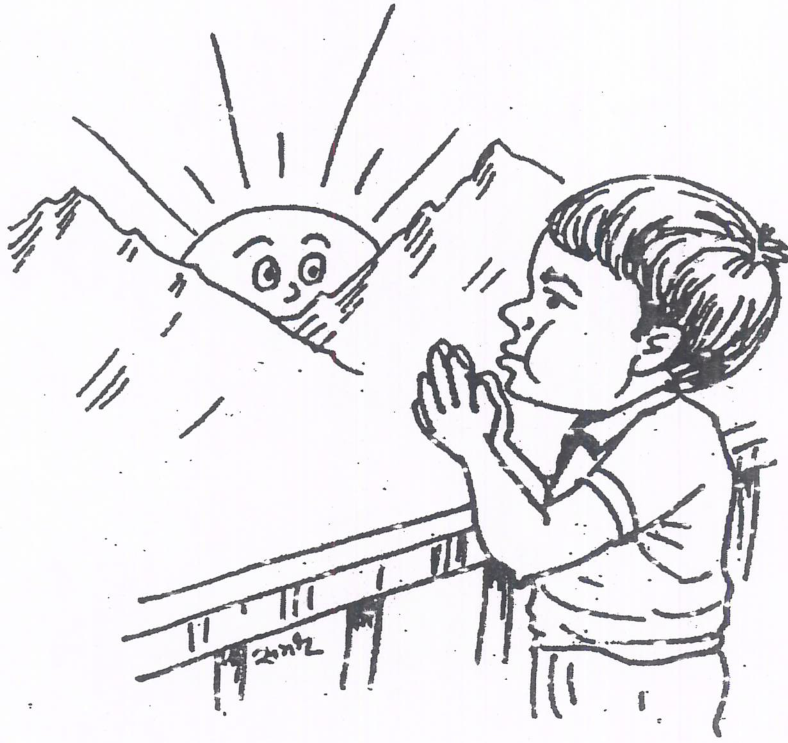
भोरे एक दिन बाबूजी संग
गाछीमे टहलू तँ जाय
गाछ-बिरिछ केर हँसब सुनब
पुनि, कोँढ़िक फूटब देखब भाय
भमरक गुन-गुन गीत सुनायब
फूल-फूल पर विचरण, खेल
पाँखि पसारब-समटब देखब
कली आओर तितली केर मेल



सूर्य उगैमे देर एखन अछि
भोर भेल पूरब दिस ताकि
नील गगनमे कोना चमाचम
चन्दा मामा देखू झाँखि
शान्त-मधुर, शीतल सन नभमे
पश्चिममे छथि चमकि रहल
सूर्यक उगिते पड़ा जाइ छथि
हुनक न कोनो चेन्ह रहल



कोनो सबेरे छत पर जा कऽ
सूर्योदय केर ताकू बाट
गगनक पथ पर लाली कोना
बदलि रहल अछि परखू तात
भोरे-भोर लाल भऽ गगनो
सूरज केर करइछ सत्कार
सूरज क्रमशः ऊपर अबइछ
प्रकृतिक ई सुन्दर चतकार



कोनो सबेरे पूब मुँहे भऽ
सूरजकेँ छी देखि रहल
कऽ प्रणाम, दऽ ध्यान मगन मन
किरणक गतिकेँ पेखि रहल
रश्मि देह पर पड़य तखनसँ
बल-बुत्तामे वृद्धि देखाय
विमल वायुसँ भरय फेफड़ा
अंग-अंग पुलकित भऽ जाय



भोरे अहाँ नित्य उठबै तँ
भेटबे करत विशुद्ध हवा
सुनब चिड़ँइ आ पातक गीतो
रोग कोनो नहि सकत दबा
मातु-पिताकेँ कऽ प्रणाम जँ
भोरे शुरू करब निज काज
तन मन निर्मल-स्वस्थ बनत
आ पूरा होयत सभटा काज



प्रार्थना

विनती हमर सुनू भगवान
शरणागत हम दीन अजान
विद्या- केर दी हमरा- दान
राखब सभठाँ हम्मर मान
मनुज मात्रसँ प्रेम करी
जीवनमे किछु नेक करी
दया अहाँ केर बनल रहय
पर-उपकारक भाव रहय



सरबन जकाँ मातु-पितु भक्ति
एकलव्य सन गुरु अनुरक्ति
शिक्षा केर दी दीप जराय
एहन भावना दिअऽ जगाय
घृणा त्यागि दी, प्रेम बढ़ाबी
हे कृपालु, चट राह बताबी
मांगी हम एहने वरदान
अपनेसँ, हे दयानिधान



मातु-पिता केर आदर सीखी
राष्ट्र भक्तिकेँ सादर सीखी
शान्तिक बनल रही हम दूत
मातृभूमि केर बनी सपूत
दुर्गा जकाँ शक्ति हो हमरा
दुर्जन जे, संहारी तकरा
कृष्ण सरिस हो हमरा ज्ञान
गीता पढ़ी सुनाबी आन



महावीर सन बनी अहिंसक
जड़-चेतनसँ प्रेम करी
शान्तिक पथकेँ सुदृढ़ करी पुनि
बुद्ध मार्ग पर गमन करी
राणा आओर शिवाजी सन हो
शौर्य दीप्त जीवन केर चाह
शत्रुक भय नहि होमय हमरा
नहि ककरोसँ होमय डाह.



धरती, गगन, पतालो धरि हम
विजयक ध्वजा देब फहराय
मातु-पिता, गुरुजन-परिजन केर
स्वप्न सफल कऽ देब देखाय
कर्मयोगमे लागल सदिखन
फलक न कहियो चाह होअय
बुद्धिक बल आ सेवा भावें
जीवन केर निर्वाह होअय